

विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। —जैक वेल्स

वर्षाकाल में आयुर्वेद की ऋतुचर्या

आयुर्वेद में दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, स्वस्थवृत्त, सद्गुण, आहार, विहार आदि स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य को रक्षा के उपयोगी और रणनीतिक उपाय हैं। पर्यावरण और पारिस्थिक तंत्र के साथ हमारे रिश्तों की अनवरत सार-संभाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। यह अनुकूलन ही धातु साम्य और दोष साम्य रखता है। यही हमें रोगों से बचाता है या आयुर्वेद की भाषा में कहें तो अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है। आज की चर्चा वर्षाऋतु में स्वास्थ्य रक्षा के विविध उपायों पर केन्द्रित है, जिसके मुख्य शास्त्रीय स्रोत चरक संहिता (च.सू.6.33-40), सुश्रुतसंहिता (सु.उ.64.46-55) एवं अष्टांगहृदय (अ.ह.सू.3.42-48) हैं। ऋतुसंखार (2.1-29) में वर्षाऋतु का आँखों-देखा हाल रोचक है। स्वस्थवृत्त पर प्रकाशित समकालीन वैज्ञानिक शोध, जो लगभग नगण्य है, का भी सहारा लिया गया है। आयुर्वेदचार्यों के अनुभवजन्य ज्ञान भी यहाँ समाहित है। संहिताओं में उपलब्ध जानकारी का मूल स्रोत लगभग आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर सातवीं शताब्दी के मध्य का है। किन्तु इनकी समकालीन सार्थकता को आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के सन्दर्भ में देखने पर भी यथावत उपयोगी है।

वर्षा ऋतु आते-आते, शिशिर, वसंत एवं ग्रीष्म ऋतु के प्रभाव से कमजोर हुये शरीर की अग्नि या भूख वात आदि दोषों से मंद पड़ती जाती है। प्रायः बादलों की छाया, नमी के कारण शीतल होना, मिट्टी में पानी पड़ने पर निकलने वाली शुरुआती भाप, भोजन का अम्ल विपाक होना और सतही जल में प्रदूषण बढ़ जाने से जठराग्नि मंद हो जाती है। वात कुपित होकर अन्य दोषों पर भी प्रभाव पड़ता है। इस कारण वर्षा ऋतु में आहार-विहार में बड़ी सावधानी रखना आवश्यक है। आहार-विहार ऐसा हो जिससे मुख्यतया वात के शमन के साथ ही कफ और पित्त का शमन भी हो। जठराग्नि चूँकि मंद रहती है, अतः भोजन का अग्निवर्धक होना आवश्यक है। सूत्र रूप में कहें तो वात शमन एवं जठराग्नि को दीप्त किये बिना वर्षा ऋतु में बीमारी से बच पाना संभव नहीं है। वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में ही, अपने आयुर्वेदचार्यों की सलाह से समुचित वमन, विरेचन, स्वेदन, मर्दन आदि से शरीर में संचित दोषों का शोधन करते हुये आस्थापन या निरूहणवर्ति का प्रयोग करना चाहिये।

खान-पान में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जब तक पहले खाया हुआ भोजन ठीक से पच न जाये, तब तक पुनः भोजन नहीं करना चाहिये। वर्षा ऋतु में आराम से पच जाने वाले खाद्य पदार्थ लेना स्वास्थ्यकर रहता है। मधुर, अम्ल एवं लवण रसों का सेवन, हलका गरम दूध, घी, पुराने जौ, गेहूँ व चावल, विशेष कर साठों के चावल लेना लाभकारी होता है। मूंग की दाल का जूस, पुराना शहद, पुराने आसव व अरिष्ट, मस्तु या दही का पानी, सौवर्चल या काला नमक, सैन्धव नमक, पंचपौल (पिप्पली, पीपलामूल, चवच, चोला, नागरमोथा) का चूर्ण वर्षा ऋतु में बहुत उपयोगी रहते हैं। जिस दिन आकाश में बादल छाये हों, उस दिन खट्टे, नमकीन व स्निग्ध खाद्य पदार्थों के साथ सूखे चने-चबौने का आनंद लिया जा सकता है। ये सब लघु होने से जल्दी पच जाते हैं। रुख व उष्ण खाद्य पदार्थ, नये अन्न, बहुत ठंडा पानी आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिये। छाछ या मठा, सत्तू के घोल आदि से बचना ही श्रेयस्कर है।

वर्षा ऋतु में नदियों, तालाबों और पोखरों में सिमट-सिमट कर आने वाला सतही जल अपने साथ बड़ी गन्दगी बहा कर लाता है। भारत में तीर्थ आर्थिक विकास, साक्षरता दर में सुधार, और बेहतर

आज दिनचर्या, रात्रिचर्या या ऋतुचर्या गहमगहम होने के साथ ही प्रज्ञापरदाय या असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग से मुक्त जीवन जीना दूषर हो रहा है। ऐसी स्थिति में वर्षा ऋतु में केवल वात ही नहीं, बल्कि पित्त व कफ भी भड़के रहते हैं। इसलिये वर्षाकाल में शरीर को स्वस्थ रखने के लिये केवल वात-नियामक, अग्नि-उद्दीपक और संक्रमण-मुक्त जीवनशैली नहीं बल्कि आयुर्वेदचार्यों की सलाह से त्रिदोष-नियामक आहार-विहार और रसायन ही हमारा कल्याण कर सकते हैं।

जल या औद्योगिक प्रदूषण से प्रदूषित न हो। उपचार के बिना कोई सतही जल पीने योग्य नहीं बचा है। यहाँ तक कि भारत की सबसे पृथ्वी और पवित्र नदी का जल भी आज समुचित उपचार के बिना पीने के सूर्यतः अयोग्य है। अतः विस्तृत साफ पानी ही पीने में प्रयोग करना चाहिये। नहाने के लिये ही नदी, नालों, तालाब या पोखर के पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि दूषित पानी में ऋतु-जन्य, परिस्थिति-जन्य एवं पर्यावरण-जन्य संक्रमणकारी और प्रदूषणकारक तत्व मिले रहते हैं। अतः स्वस्थ रहने के लिये दिनचर्या, ऋतुचर्या, स्वस्थवृत्त आदि जैसे सभी साधारण उपाय करना चाहिये। बिना जूते पहने नंगे पैर कीचड़ या गीली मिट्टी में चलना ठीक नहीं होता। गीले कपड़े नहीं पहनना चाहिये। वस्त्रों को समय-समय पर धूप में डालते रहना चाहिये या धोकर और सुखाकर अच्छी तरह प्रेस करने के बाद पहनने चाहिये। रहने की जगह भी ऐसी हो जहाँ शीतल या वर्षा की बौछारें न पहुँचती हों। वर्षा ऋतु में दिन में नहीं सोना चाहिये। अधिक परिश्रम करना, या धूप या ओस में बहुत ज्यादा समय तक रहना भी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। बहुत अधिक व्यायाम या सेक्स भी वर्षा ऋतु में ठीक नहीं होता, हालाँकि आश्रय विरहित सार संग्रह में उपवन में टहलना और नियमित व्यायाम शक्ति संचय के लिये कल्याणकारी माना गया है। वर्षाऋतु के अन्त में जब शरद ऋतु आने वाली होती है तब तक शरीर में पित्त का संचय होता रहता है और शरद ऋतु के आते ही संचित पित्त कुपित होने लगता है। अतः वर्षाऋतु के अन्त में अपने आयुर्वेदचार्यों की सलाह से तित्कतवृत्त या महातित्कतवृत्त का प्रयोग लाभकारी होता है।

भारत में छह प्रमुख वेक्टर जिनमें रोगों का भारी प्रकोप है। इनमें मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, फाइलेरियासिस, जापानी एन्सेफलाइटिस और विस्त्रललिशमानियासिस शामिल हैं जो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बढ़ सकते हैं। वर्षा ऋतु में तापमान की अधिकता के साथ ही जल की प्रचुरता से बैक्टीरिया, वायरस, मच्छर, मकड़ी आदि का प्रकोप भी बढ़ जाता है। अध्ययन बताते हैं कि वर्षा ऋतु में डेंगू-संक्रमित मच्छरों का प्रतिशत बढ़ जाने से आगे चलकर उनकी संक्रामकता बढ़ जाती है। साथ ही सदी, खासी, जुखाम, बुखार, अपच, डायरिया आदि का प्रकोप भी बढ़ जाता है। ऐसी दशा में बीमार पड़ने पर प्रायः आयुर्वेद की वे औषधियाँ जो एन्टी-वायरल, एन्टी-बैक्टीरियल व एन्टी-इन्फेक्टिव प्रभाव वाली होती हैं उनसे शीघ्रता से लाभ मिलता है। विविध प्रकार के वायरल संक्रमण के कारण रक्त में प्लेटलेट्स की संख्या में भारी कमी जानलेवा हो सकती है। अतः तुलसी, गुड़ची, कालमेष जैसे औषधीय पौधों से प्राप्त मानकीकृत औषधियाँ लाभकारी हो सकती हैं। इन प्रजातियों को घरों के आसपास उगाकर रखना और आयुर्वेदचार्यों की सलाह से चिकित्सकीय उपयोग जीवन-रक्षा में मददगार हो सकता है।

इस सब चर्चा का हमारे लिये महत्व यह है कि यदि स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ नहीं करना है तो समुचित ऋतुचर्या का पालन करना चाहिये। इससे अनावश्यक बीमार पड़ने से होने वाली धन की बर्बादी से बचा जा सकता है। याद यह भी रखना है कि ऋतुचर्या के पालन का अर्थ यह नहीं है कि आयुर्वेदोक्त दिनचर्या, रात्रिचर्या, स्वस्थवृत्त या सद्गुण आदि से छुटकारा मिल गया।

सारंशतः देखें तो वर्षाऋतु में चार बातें सम्भालना आवश्यक है: प्रकृपित वात का शमन, मंद पड़ी जठराग्नि का प्रज्वलन, प्रदूषित जल व खाद्य सामग्री से पूर्ण बचाव, और वेक्टर-बॉन बीमारियों से बचाव। आचार्य चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट आदि ने हालाँकि यह स्पष्ट किया है कि वर्षा ऋतु में वात का प्रकोप बढ़ता है किन्तु समकालीन वैज्ञानिक अध्ययन और अनुभवजन्य ज्ञान स्पष्ट करता है कि आज दिनचर्या, रात्रिचर्या या ऋतुचर्या गहमगहम होने के साथ ही प्रज्ञापरदाय या असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग से मुक्त जीवन जीना दूषर हो रहा है। ऐसी स्थिति में वर्षा ऋतु में केवल वात ही नहीं, बल्कि पित्त व कफ भी भड़के रहते हैं। इसलिये वर्षाकाल में शरीर को स्वस्थ रखने के लिये केवल वात-नियामक, अग्नि-उद्दीपक और संक्रमण-मुक्त जीवनशैली नहीं बल्कि आयुर्वेदचार्यों की सलाह से त्रिदोष-नियामक आहार-विहार और रसायन ही हमारा कल्याण कर सकते हैं।

—अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सावैभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

राशिफल

रविवार 17 जुलाई, 2022

सावन मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2079, शतभिषा नक्षत्र दिन 1:25 तक, सौभाग्य योग सांय 5:48 तक, बालव करण दिन 10:50 तक, चन्द्रमा कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरु-मीन, शुक-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

श्रेष्ठ पंचक है।

आज चौघड़िया: चर 7:29 से 9:10 तक, लाभ-अमृत 9:10 से 12:33 तक, शुभ 2:14 से 3:56 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:18



पंडित अनिल शर्मा

मेष
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सांसाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला
परिजन के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है और आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक
घर-परिवार के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। अटक हुआ धन प्राप्त होगा।

धनु
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। मन में अस्तोष और भय बना रहेगा।

मकर
परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा और अनावश्यक धन खर्च होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। वाणी की कटुता के कारण परिवार में तनाव बढ़ सकता है।

सिंह
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मंगलिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कुंभ
व्यक्तिगत कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में शुभ-मंगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। मन का भय समाप्त होगा।

मीन
घर-गृहस्थी के अंगण से अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। खर्चों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

महंगाई ने बदला बाज़ार का ट्रेंड



डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

जाए तो हम पाएंगे कि इनके बढ़ते दाम का असर पूरे बाजार पर तत्काल पड़ता है। क्योंकि वस्तुओं का परिवहन महंगा हो जाता है तो मूल्य में बढ़ोतरी स्वाभाविक ही हो जाती है। यह कोई अकेला कारक नहीं है पर इसका अपना और महत्वपूर्ण असर देखा जा सकता है।

देखा जाए तो महंगाई के बढ़ते उपभोक्ता मांग बढ़ने की बात करना ही बेमानी हो जाती है। लोगों की आय सीमित हो गई है। कोरोना का असर यह रहा है कि लोगों की नौकरी छूटी तो नौकरी को बचाने के लिए कई समझौते करने पड़े। संस्थानों ने नियोक्ताओं ने कार्मिकों के वेतन भत्तों में तेजी से कटौती की। नौकरी की मजबूरी के चलते कार्मिकों को भी सबकुछ सहन करना पड़ा। कोरोना के

लक्जरियस वस्तुओं की खरीद को तो आम नागरिक कुछ समय के लिए डेफर करने में ही भलाई समझने लगे हैं

बाद भी कई क्षेत्र तो ऐसे हैं जिनके पट्टी पर आने में लंबा समय लगना तय माना जा रहा है। पर्यटन उद्योग, होटल उद्योग अभी पूरी तरह से पट्टी पर नहीं आ पाया है तो दूसरी ओर कृषि लागत में बढ़ोतरी और न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी से खाद्यान्न महंगे होते जा रहे हैं। चीन के कारण भी दुनिया के देशों की आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित हुई हैं। कोरोना के बाद से दुनिया के अधिकांश देशों की नजर में चीन विलेन के रूप में उभरा है वहीं चीन अभी भी कोरोना संकट से गुजर रहा है। लोग चीन से बेतहासा नाराज हैं।

उपभोक्ता का अपना मिजाज होता है। समय के साथ उसके मिजाज में बदलाव भी आता है। बाजार के हालिया हालातों से यह साफ हो जाता है। भारतीय बाजार की ही चर्चा करें तो भारतीय उपभोक्ता की मानसिकता को इसी से समझा जा सकता है कि 16 माह में स्मार्टफोन बदलने वाले उपभोक्ता अब इसे आठ से बारह महीने व इससे भी अधिक के लिए

डेफर करने लगे हैं तो बेतहासा गर्मी के बावजूद एसी मार्केट उतार नहीं उठ पाया जितनी संभावना मानी जा रही थी। एकवृत्त में देखा जाए तो सरकारों की लाख योजनाओं के बावजूद लोगों की स्वास्थ्य खर्च की चिंता अधिक बढ़ी है।

कोरोना के बाद लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक सावचेत हुए हैं। यही कारण है कि लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए हैं। इसके साथ ही मेडिकल इश्योरेंस के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है। हालाँकि इसके प्लस माइस अलग विश्लेषण का विषय हो जाता है। देखा जाए तो जिस तरह से लोगों ने पेट्रोल डीजल के भावों से समझौता कर ही लिया है तो फिर उसकी खानापूर्ति अपने अन्य खर्चों यहाँ तक कि घरेलू दिन प्रतिदिन के खर्चों में भी कमी करके की जाने लगी है। ऐसे में सवाल महंगाई पर अंकुश लगाने का हो जाता है। बढ़ते मूल्यों पर रोक और इकोनोमी को पट्टी पर लाना सरकार के सामने बड़ी चुनौती है और इस चुनौती का हल निकाल कर ही लोगों को राहत दी जा सकती है। ऐसे में अब सरकार की पहली प्राथमिकता महंगाई बढ़ने के कारकों को नियंत्रण में लाना होना चाहिए तभी जाकर के बाजार में मांग और आपूर्ति में गति आ सकेगी।

—डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, (वरिष्ठ लेखक)

‘धार्मिक स्थानों को मिलेगी सीधी रेल कनेक्टिविटी’

श्रीगंगानगर, (निसं)। आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमेटी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 2798.16 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से रेल मंत्रालय द्वारा बनाई जाने वाली तारंगहिल-अंबाजी-आबू रोड नई रेल लाइन (116.65 किलोमीटर) के निर्माण को मंजूरी दे दी है। यह परियोजना 2026.27 तक पूरी की जाएगी। इस परियोजना में निर्माण के दौरान लगभग 40 लाख मानव दिवसों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे।

अंबाजी देश का प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है तथा यह भारत में 51 शक्तिपीठों में से एक में सम्मिलित है। अंबाजी धार्मिक स्थल में हर साल गुजरात के और देश के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ विदेशों से लाखों भक्त दर्शन के लिये आते हैं। तारंगहिल-अंबाजी-आबू रोड नई लाइन के निर्माण से यहाँ आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को यात्रा में आसानी होगी। इसके अलावा, तारंगहिल में स्थित अजोतनाथ, स्वयं मंदिर (24 पवित्र जैन तीर्थकरों में से एक) के दर्शन के लिये आने वाले श्रद्धालुओं के लिये यह रेल लाइन से दूष के अन्य ब्रांडेज नेटवर्क से सम्पर्क स्थापित करेगी। यह रेल लाइन कृषि और स्थानीय उत्पादों के परिवहन में तीर्थ आगमन की सुविधा प्रदान करेगी और गुजरात और राजस्थान राज्यों को देश के अन्य हिस्सों के साथ बेहतर गतिशीलता प्रदान करेगी। यह परियोजना मौजूदा अहमदाबाद-आबू रोड रेलवे लाइन के लिए बैकल्पिक मार्ग भी प्रदान करेगी। प्रस्तावित नई रेल लाइन राजस्थान के सिरोंही जिले

रेल लाइन कृषि और स्थानीय उत्पादों के परिवहन में सुविधा प्रदान करेगी

और गुजरात के साबरकांडा, बनासकांडा और महेसाणा जिलों से होकर गुजरेगी।

तारंगहिल-अंबाजी-आबू रोड नई रेल लाइन पर कुल 15 स्टेशन प्रस्तावित हैं, जिनमें 8 क्रासिंग और 7 हॉल्ट स्टेशन होंगे तथा 11 टनल, 54 बड़े पुल, 151 छोटे पुल, 8 रोड ओवर ब्रिज, 54 रोड अण्डर ब्रिज/सीमित ऊंचाई के पुल तथा यह विद्युतीकृत ट्रेक्शन पर संचालित मार्ग होगा। परियोजना के निर्माण से गुजरात और राजस्थान राज्यों के पर्यटन और धार्मिक स्थलों का रेल परिवहन के माध्यम से सम्पर्क स्थापित होगा, जिसमें प्रमुख पर्यटक स्थल माउंट आबू और आध्यात्मिक केन्द्र प्रजापिता ब्रह्मकुमारि ईश्वरिया विश्वविद्यालय, हिलवाडा के जैन मंदिर अम्बाजी में स्थित देवी शक्ति पीठ, तारंगहिल में जैन धर्म के तीर्थ स्थल प्रमुख हैं।

यह रेल लाइन इस क्षेत्र में स्थित डेयरी और मार्बल उद्योग के विस्तार में भी सहायक होगी तथा रेल के आगमन से इस क्षेत्र में अन्य उद्योग और इण्डस्ट्रीज के आने की संभावना बनेगी। तारंगहिल-अंबाजी-आबू रोड नई रेल लाइन की स्वीकृति पर आमजन, जन प्रतिनिधियों, उद्योगियों, व्यापारियों तथा धार्मिक और पर्यटक स्थलों के पदाधिकारियों ने खुशी जाहिर की।

राष्ट्रीय मिलिटरी स्कूल धौलपुर ने 60 साल पूरे होने पर मनाया समारोह



धौलपुर मिलिटरी स्कूल के समारोह के दौरान मैराथन में दौड़ लगाने युवा।

धौलपुर, (निसं)। राष्ट्रीय मिलिटरी स्कूल धौलपुर पूर्ववर्ती किंग जॉर्ज स्कूल आज से 60 साल पहले दिनांक 16 जुलाई 1962 को पांचवा राष्ट्रीय मिलिटरी स्कूल धौलपुर में स्थापित किया गया। इस संस्थान ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में छात्रों के निरंतर विकास, विस्तार और उनकी उन्नति में अपना योगदान दिया है। सैन्य मूल्यों और अपने आदर्श वाक्य के साथ नेतृत्व "चरित्र सर्वोच्च गुण है" शीलम परम भूषणम के साथ आगे बढ़ना सिखाया।

डायमंड जुबली वर्ष में विद्यालय कई कार्यक्रमों का आयोजन करने जा रहा है। विद्यालय ने अपने डायमंड जुबली समारोह के पहले डेवेंट में शनिवार को ओपन मैराथन के साथ

शुभारम्भ किया। इस समारोह में पूर्व छात्र ब्रिगेडियर वी. के. रौतेला स्टेशन कमांडर, स्टेशन हेड-क्वार्टर भरतपुर ने शनिवार को स्थापना दिवस की अल शनिवार 05:30 बजे स्कूल के राकेश शर्मा स्टेडियम से हरी झंडी दिखाकर मैराथन के धावकों को रवाना किया।

गणमान्य व्यक्तियों तथा धौलपुर के नागरिकों और धौलपुर के ही विभिन्न कॉलेज और स्कूल के छात्रों ने भाग लिया। इस दौरान मिलिटरी स्कूल धौलपुर के प्रिंसिपल लेफ्टिनेंट कर्नल श्याम कृष्णा टी.पी., अध्यक्ष ओ.बी.ए. और ओल्ड बॉयज के अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। शनिवार को भरतपुर में एक वरचुअल साइडकोर्योन और एक साइकिल अभियान का भी आयोजन किया गया

पूर्व छात्र ब्रिगेडियर वी. के. रौतेला स्टेशन कमांडर ने मैराथन धावकों को रवाना किया

था। जिसे भरतपुर आईजी गौरव श्रीवास्तव और पुष्पेंद्र सोलंकी कमांडेंट आर.ए.सी., भरतपुर की अध्यक्षता में पूर्व छात्रों की एक टीम ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिसमें कई पूर्व छात्र, पुलिस कर्मी और भरतपुर के सरकारी और गैर सरकारी नागरिकों ने हिस्सा लिया और इसमें उत्साही प्रतिभागियों ने 60 किलोमीटर साइकिल चलाकर अभियान पूरा किया।

चिकित्सा मंत्री के क्षेत्र में स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ बेहाल



सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मंडावरी के लेबर रूम में फर्श पर बदहाल अवस्था में पड़ी सक्सेन मशीन।

कवायदों पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में कार्यरत चिकित्सा अधिकारी एवं चिकित्सा कर्मी पानी फेरते नजर आ रहे हैं। शनिवार को यहाँ चारों तरफ अव्यवस्थाओं का आलम दिखाई दिया। वार्ड के अंदर बेड पर गंदी मैली

परिसर में जमा बंदबूदार पानी एवं गंदगी युक्त माहौल मरीजों को और ज्यादा बीमार कर रहा है

लेबर रूम मिला बदहाल, वार्ड में बंदबूदार गंदी बेडशिट मिली

कुचेली बंदबूदार चदर, लेबर रूम में प्रसव के दौरान इस्तेमाल आने वाला अधिकतर सामान मौजूद नहीं था। लेबर रूम में अव्यवस्थाओं का आलम साफ कर रहा था कि अगर आपातकाल

में प्रसव कराना पड़े तो तकनीकी सुविधाओं के अभाव में प्रसूता की जान खतरे में पड़ेगी। स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में कीचड़ युक्त बंदबूदार जमा बरसाती पानी एवं व्याप्त गंदगी के कारण माहौल आने वाले मरीज को और ज्यादा बीमार करने के लिए पर्याप्त है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में रात्रि कालीन सेवाओं के समय विशेष तौर से पाया गया है कि ऑन कॉल के नाम से चिकित्सक खुद के क्वार्टर में आराम फरमाते हैं एवं किसी आपातकालीन समय के दौरान वहाँ आने वाले मरीज को तुरंत सेवा नहीं मिलती है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में पिछले बीते समय से आने वाली प्रसूताओं को स्थानीय स्तर पर प्रसव कराने की बजाय वहाँ से रैफर करने की भी परंपरा डाली हुई है।